www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

युग शिल्पियों की गरिमा ऊँची रहे

— ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युगशिल्पियों की गरिमा का स्तर ऊँचा रहे

मनुष्य को सृष्टा ने युवराज के उत्तरदायित्व निभाने के लिए सृजा है। उसे अन्य सभी प्राणियों की तुलना में कहीं अधिक साधन प्रदान किए हैं। इसमें पक्षपात नहीं, औचित्य झांकता है। अन्य प्राणी पेट-प्रजनन भर में निरत रहते हैं, पर मनुष्य को तो आत्म कल्याण के लिए पवित्रता-प्रखरता बढ़ाने और लोक कल्याण के लिए संयम पूर्वक उदार सेवा-साधना करने में निरत रहने के दुहरे दायित्व निभाने पड़ते हैं। इसमें मनुष्य जन्म और सृष्टा के विशिष्ट सृजन की सार्थकता है। मनुष्य की स्वाभाविक आवश्यकता नितांत स्वल्प है, फिर उसकी शारीरिक संरचना और बौद्धिक क्षमता इतनी बढ़ी-चढ़ी है कि थोड़ा-सा प्रयत्न करने पर भी औसत नागरिक स्तर का निर्वाह संभव हो सकता है। परिवार को अनावश्यक रूप से न बढ़ाया जाय तो जो वर्तमान हैं, उन्हें स्वावलम्बी-सुसंस्कारी बनाने के प्रयत्न भर से कौटुम्बिक दायित्व निभ सकता है। जिन्हें सोने की लंका बनानी है, और संतानों को इन्द्र-कुबेर के समतुल्य बनाने की ठान ठानी है, उन रावणों के लिए कोई क्या कहे, पर जो औचित्य की मर्यादा में रहने का अनुशासन साध सकें, उनके लिए उदर पूर्ति और परिवारगत जिम्मेदारी इतनी भारी नहीं पड़ती, कि उसी के लिए कोल्हू के बैल की तरह निरंतर जुते रहें और मनुष्य जन्म के साथ जुड़े हुए अनुबन्धों को पूरा करने में व्यस्तता-विवशता असमर्थता व्यक्त करते रहें। बुद्धि-विभ्रम ही है, जिसमें ग्रस्त रहकर के मनुष्य मकड़ी की तरह अपने को फसाने वाला जाला अपने आप बुनता है, और जकड़न का दबाव पड़ने पर रोता-चिल्लाता भी है। विवेक उग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़े, तो व्यक्तिगत कठिनाइयों और समस्याओं का समाधान चुटकी बजाते हो सकता है। मकड़ी में यह क्षमता भी रहती है, कि वह अपने बुने जाले को समेटकर उदरस्थ कर ले, और जाल-जंजाल से छुटकारा पाकर प्रसन्न स्वच्छन्द विचरण करने लगे।

संकीर्ण स्वार्थपरता की सड़ी कीचड़ से निकलकर जिनने भी आदर्श वादिता के स्वर्ग-सोपान में प्रवेश किया है, उन दूरदर्शी महामानवों में से प्रत्येक को अपनी व्यस्तता-असमर्थता का समाधान करना पड़ा है। यह लगता भर कठिन है, पर है वस्तुतः बहुत सरल। औसत नागरिक स्तर का निर्वाह अपनाने और मनोयोग पूर्वक श्रम करने का अवलम्बन जहाँ अपनाया नहीं, कि आर्थिक चिंता से निवृत्ति मिली नहीं। घर के लोगों को श्रमशीलता, सहकारिता, मितव्ययिता जैसे सद्गुणों का अभ्यास करा दिया जाय, तो वे मिलजुल कर ही निर्वाह की गाड़ी धकेल लेते हैं, उनके लिए सहायता की थोड़ी बहुत ही अतिरिक्त आवश्यकता पड़ती है। आलसी-प्रमादी और बरसाती मच्छरों की तरह बेहिसाब संख्या वाला कुटुम्ब ही भारभूत होकर रहता है। इस स्थिति को सूझबूझ के साथ सुधारने में प्रत्येक आदर्शवादी को सफलता मिली है। उनमें से प्रत्येक ने निर्वाह और कुटुम्ब की समस्याओं के उचित समाधान का तालमेल इस प्रकार न सही तो उस प्रकार बुन लिया है। सूझबूझ अपनाने वाले ही, मनुष्य जीवन सार्थक किए, दायित्व निभाये और कृतकृत्य बने हैं।

ऐसे तो यह सुर-दुर्लभ अवसर ही उच्चस्तरीय उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त करने के लिए मिला है, और हर विवेकवान उसे सदा से उसी निमित्त प्रयुक्त करता रहा है। फिर भी कुछ विशेष समय ऐसे होते हैं, जिनमें प्रमाद बरतने की तनिक भी गुंजाइश नहीं होती और सामान्य लाभ हानि का विचार किये बिना आपत्तिकालीन जैसे संकटों से निपटने के लिए हर भावनाशील को दौड़ लगानी पड़ती है। अग्निकाण्ड, बाढ़, भूकम्प, तूफानी, दुर्भिक्ष, महामारी, दुर्घटना जैसे अवसरों पर विपत्ति-ग्रस्तों की सहायता के लिए बिना समय गँवाये और बिना आगा-पीछा सोचे भागकर पहुँचना पड़ता है। इन दिनों ऐसी ही महामारी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विपत्ति वेला है। अणु आयुध, विकिरण, प्रदूषण, जनसंख्या, विस्फोट, अतिशय उत्खनन, अंतरिक्ष का असंतुलन जैसे अनेकों कारण महाप्रलय जैसी परिस्थितियों को क्रमशः निकट लाते चले जा रहे हैं। यह प्रस्तुत जनसमुदाय के भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण का परिणाम है। इसे न समेटा बुहारा गया, तो मेहतरों के हड़ताल में हैजा फैलने जैसी विपत्ति खड़ी होने में तनिक भी संदेह नहीं। ठीक यही समय है, जब युग-प्रहरियों को विपत्ति से जूझने के लिए प्रबल पराक्रम करना चाहिए और निजी लाभ-हानि की बात को प्रमुखता नहीं देनी चाहिए।

असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए राष्ट्रपति शासन लागू होने जैसी सृष्टा की गतिविधियाँ चल पड़ी हैं। आद्यशक्ति-युगशक्ति महाप्रज्ञा का अवतरण इन्हीं दिनों हो रहा है। प्रज्ञावतार ही पौराणिक निष्कलंक है। अवतारों के सहायक-सहभागी व्यक्तिगत रूप में नगण्य होते हुए भी सामयिक साहस के सहारे हनुमान अर्जुन की तरह महान बने हैं। गाँधीजी के स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हुए लोगों ने अपने त्याग का समुचित सत्परिणाम भी उपलब्ध किया है। आज भी ठीक ऐसा ही समय है। महाकाल की युग परिवर्तन योजना में सहभागी बनने वाले जितना खोयेंगे उसकी तुलना में हजार गुना प्राप्त करके रहेंगे—यह भी निश्चित है।

जागृत आत्माओं के प्रति युग धर्म का तुमुल उद्घोष जैसा आह्वान है, कि वे बगलें नझांकें, कृपण कायरता छिपाने के लिए बहाने न बनायें, व्यस्तता-असमर्थता का रोना न रोयें और आपत्ति कालीन परिस्थितियों में कठोर कर्तव्य निभाने वालों की तरह युग-परिवर्तन के मोर्चे पर अग्रिम पंक्ति में जा खड़े हों। अपने समय की यही सर्वोपरि बुद्धिमत्ता और दूरदर्शी विवेकशीलता है।

क्या करना है? इसके लिए प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों की ऐसी सूची सामने है, जिसमें हर स्थिति का व्यक्ति अपनी योग्यता और स्थिति के अनुरूप काम करने का चुनाव कर सकता है और जितना समय दान—अंशदान बन पड़े, उतना लोकमानस के परिष्कार एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन के युगान्तरीय कार्य में योगदान दे सकता है। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सामान्यों की बात हुई। असामान्यों के कदम भी असामान्य ही उठने चाहिए। मूर्धन्यों को इन दिनों पूरा समय इसी प्रयोजन के लिए लगा देने की बात सोचनी और भावभरी तैयारी करनी चाहिए। ऐसा साहस अन्तरात्मा और परमात्मा के ही परामर्श से जुट सकता है, अन्यथा मित्र, संबन्धी, कुटुम्बी, तो अन्यान्यों की तरह स्वार्थरत रहने और जोड़ने उजाड़ने के लिए जैसे-तैसे बहुत कमाने के अतिरिक्त और कोई सलाह दे ही नहीं सकते। मोह ग्रस्तों का आग्रह भी यह रहता है, कि कोई स्वजन को आँख से ओझल न होने दिया जाय। उन तथाकथित स्वजन-सम्बन्धियों की सहमति की जो भी प्रतीक्षा करेंगे, उनके लिए कभी भी ऐसा दिन न आयेगा, जब घर वाले हार पहना कर उन्हें विदाई दें। युद्ध सैनिकों जैसी कठोर किन्तु आदर्शवादी मनोभूमि बनाने से ही काम चलेगा।

जिनके पास कुछ पूर्व संचय है, वे उसे समेट-बटोर कर बैंक में जमा कर दें, और उसकी ब्याज से कुछ नियमित आजीविका के सहारे निर्वाह व्यवस्था जुटाने की बात सोचें। उद्योग-धंधों में से किसी का ठिकाना नहीं कि वे सदा लाभ देंगे ही और निर्वाह की नियमित आवश्यकता पूरी कर सकेंगे या नहीं। इसके लिए बैंक-ब्याज ही सुनिश्चित उपाय है। उत्तराधिकारियों ने धंधा और दायित्व संभाल लिया हो तो बात दूसरी है। इसके अतिरिक्त जो कमी पड़ती हो, उसे संस्था से बिना किसी संकोच के लिया जा सकता है। इसमें तनिक भी देरी नहीं होती कि निर्वाह के ब्राह्मणोचित साधन जनता से उपलब्ध किये जायँ। यह साधु-ब्राह्मण परम्परा है। उसकी प्रतिष्ठा भी रही है और सराहना भी हुई है। जो पूरा समय लोक-मंगल के लिए समर्पित करते हैं, उन्हें भी अन्न वस्त्र चाहिए ही। इसके बिना जीवित रहना संभव नहीं। जो जियेगा नहीं, वह सेवा कैसे करेगा ? निर्वाह के उपार्जन में निरत रहने पर इतना कम समय बचता है कि उसे पास-पड़ोस में बन पड़ने वाले छोटे-मोटे कार्यों में ही लगाया जा सकता है। पूरा समय अनवरत श्रम और मनोयोग माँगने वाले महान कार्यों का बन पड़ना तभी संभव है, जब निजी व्यवसाय की चिन्ता में श्रम, समय और मनोयोग न बँटे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आपत्तिकालीन परिस्थितियों को देखते हुए इन दिनों दिन-रात एक ही चिन्तन और प्रयास में जुटे रहने वालों की ही प्रमुख आवश्यकता है। जो ऐसा कर सकें समझना चाहिए, उनका ऐसा कदम उठा, जिसकी नितांत आवश्यकता थी। ऐसे साहसी, आदर्शवादी यदि यह देखें कि उनके निजी व पारिवारिक निर्वाह की ब्राह्मणोचित व्यवस्था बनाने में कमी पड़ती हो, तो उतनी बिना किसी संकोच के संस्था से अनुदान प्राप्त करते रह सकते हैं। साधु-ब्राह्मणों का निर्वाह दान दक्षिणा एवं भिक्षाटन से ही चलता रहा है। इसमें उनका गौरव घटने जैसा प्रसंग कभी भी कहीं भी नही आया। सेवा की तुलना में अधिक राशि मांगने और गुजारे के साधन होते हुए वेतन वसूल करने की लिप्सा जब उभरती है तभी निन्दा होती हैं। ब्रह्म कार्य में, युगधर्म में निरत व्यक्ति को इतना तो सोचना ही होगा,कि वह विलास, व्यामोह अथवा संचय के लिए सार्वजनिक संस्था सेधन वसूल तो नहीं कर रहा है।

प्रज्ञा पीठों और संस्थानों के लिए इन दिनों सर्वत्र स्थायी कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता पड़ रही है। जो अपनी योग्यता, लगन एवं ईमानदारी इसके लिए उपयुक्त समझें, उन्हें युगशिल्पी की सेवा में अविलम्ब भर्ती होना चाहिए और संस्थान के संचालकों से संपर्क स्थापित करके यह विचार विनिमय करना चाहिए कि अनुदान का तालमेल बैठा या नहीं। यदि बैठता हो तो उसे योग्यता के बदले मिला वेतन नहीं, वरन् ब्राह्मणोचित निर्वाह प्राप्त करने की सनातन धर्म-परम्परा समझते हुए प्रसन्नता पुर्वक अंगीकार कर लेना चाहिए।

वेतन भोगी कर्मचारी और लोक सेवी में मौलिक अंतर एक ही है, कि कर्मचारी वेतन को तौल कर श्रम करता है और समय देता है, जबकि लोक सेवी को नित्यकर्म के अतिरिक्त जगने से सोने तक का अथवा जितना निर्धारण हुआ हो उतना समय पूरी लगन और ईमानदारी के साथ निर्धारित लक्ष्य के लिए ही नियोजित किये रहना पड़ता है। उसमें आलस्य प्रमाद की गुंजायश नहीं है। छुट्टी, बोनस, तरक्की आदि का धर्मिकों जैसा निर्धारण भी लागू नहीं होता। आवश्यकता पड़े, तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही छुट्टी लेनी चाहिए, अन्यथा उन महामानवों की नकल करनी चाहिए जिनने अनिवार्य आपत्ति के अपवादों को छोड़कर कभी छुट्टी नहीं मनायी। दिनरात आजीवन कार्य करते रहे। यदि पारिवारिक जिम्मेदारी घरती है, तो निर्वाह राशि में भी कमी करते चलना चाहिए। वेतन और तरक्की जैसे नियम लोक सेवी पर लागू नहीं होते। वैसी ललक उठे, तो समझना चाहिए कि सेवा-साधना का अध्याय समाप्त हो गया और कर्मचारी की हेय प्रवृत्ति जाग पड़ी।

सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है, कि लोक सेवी को गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से सामान्यजनों की तुलना में कहीं ऊँचा होना चाहिए। वक्ता स्टेज पर बैठते हैं, और श्रोता जमीन पर बैठते हैं। जनसमुदाय को जमीन पर बैठने वाले सामान्यजन माना जा सकता है। आदर्शवादिता के प्रवक्ता को पुरोहित कहा जाता है, उसका स्तर अपेक्षाकृत कहीं ऊँचा होना चाहिए। सांचे खिलौने ढालते हैं। युगशिल्पी अपने व्यक्तित्व में उत्कृष्टता की मात्रा बढ़ी-चढ़ी रखेंगे; तो यह आशा की जा सकती है, कि सम्पर्क में आने वाले उनसे प्रभावित होंगे और परामर्श प्रतिपादन पर कान धरेंगे। अशिष्ट, अस्त-व्यस्त, अनगढ़ प्रकृति के व्यक्ति जहां जाते हैं; वहीं विक्षोभ उत्पन्न करते हैं। ऐसी दशा में उनके उपदेशों पर कोई ध्यान धरे या व्यक्तिगत मान दे—यह भी संभव न होगा।

विनय शीलता, शिष्टता, सज्जनता, लोक सेवी के व्यवहार और वचन में पूरी तरह परिलक्षित होनी चाहिए। दूसरों को मान देकर ही उन्हें अपना बनाया जा सकता है। क्रोधी, जल्दबाज, कटुभाषी, अहंकारी प्रकृति के व्यक्ति जहाँ भी जाते हैं अपने अनगढ़ स्वभाव के कारण अनायास दुत्कारे जाते हैं, फिर भी यदि वे किसी प्रयोजन विशेष के लिए गये हैं, तब तो सफलता मिलने की आशा बँधेगी ही नहीं। प्रज्ञा मिशन के कार्यकर्त्ताओं को नम्र, नियमित, शिष्ट, मधुरभाषी, मिलनसार, हँसमुख और सहज सेवा भावी प्रकृति का होना चाहिए। जिनमें इन गुणों की कमी है, उन्हें निजी सुधार का प्रयत्न भी सेवा-साधना के साथ-साथ ही जारी रखना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कोई युगशिल्पी अपने काम को छोटा न समझे। कुर्सी पर बैठने वाले अधिक कमाने वालों से अपनी तुलना न करे। वरन् वह सोचे कि उसे कितने महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न होने का सौभाग्य मिल रहा है। घरों पर जाने–बाजार में निकलने का काम ऐसा नहीं है, जिसमें किसी की हेटी होती हो। यह तीर्थ यात्रा, परिक्रमा, प्रदक्षिणा, जैसा धर्म कृत्य है। उसमें घर घर अलख जगाने की सन्त परम्परा का समावेश है। बादल भी तो खेत खेत पर पानी बरसाने के लिए स्वयं दौड़ते हैं। सूर्य, चंद्र, पवन को जब जन जन से सम्पर्क साधने में देरी नहीं लगती तो युग शिल्पी ही अपना मन छोटा क्यों करे और फेरी वालों से अपने कृत्य की तुलना करके क्यों सकुचायें। हमें ओछों के साथ नहीं महानों के साथ तुलना करनी चाहिए और वानप्रस्थ परिव्राजकों की महान सेवा साधना का अनुकरण करने में गौरव की अभिवृद्धि अनुभव करनी चाहिये।

प्रज्ञा अभियान के कार्यकर्त्ता पीले वस्त्र धारण करते हैं। यह मिशन के प्रति निष्ठा व्यक्त करने का परिधान है। इसमे साधु बाबा बनने जैसा कुछ भी सम्मिलित नहीं है स्कूली वस्त्रों से लेकर पुलिस सैनिकों तक सभी अपनी निर्धारित वर्दी पहन कर गौरवान्वित होते हैं तो कोई कारण नहीं कि ये युग सृजन के कर्णधारों को नव प्रभात का प्रतीक पीतवर्ण का परिधान पहनने में आपत्ति हो। साधुता की दुर्गति हेय स्तर के लोगों ने की है। जब आदर्शवादी उस क्षेत्र में प्रवृत होंगे, तब न केवल उस परम्परा का वरन् उसके परिधान रज्जु का भी सम्मान बढ़ेगा। भील बच्चों की तरह ब्रह्मदण्ड हाथ में लिए रहना भी अपने लक्ष्य और प्रयास का परिचय देना है। बिल्ला लगाकर भी अपनी स्थिति का सर्व साधारण को परिचय दिया जाता है। इन प्रतीकों को धारण करने में हर युग शिल्पी अपने को अग्रगामी समझे और गौरवान्वित अनुभव करे–यही उपयुक्त है।

प्रका० मुद्रक:– युगान्तर चेतना प्रेस शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य:– ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org